PHILOSOPHY

B.A. (Hons.), Paper III (Part II)

Motive and Intention
(प्रयोजन और अभिप्राय)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

⇒ प्रयोजन (Motive):-

→ प्रयोजन प्रवर्तक है अर्थात् किसी कर्म में गति प्रदान करनेवाली शक्ति (moving force); वह जो किसी विशेष कर्म में प्रवृत्त करे, वही प्रयोजन है अर्थात् वही प्रयोजन है जिसकी वजह से हम कोई काम करते हैं। यह दो हो सकता है - एक उत्तेजक और दूसरा प्रेरक अर्थात् कोई भावना (feeling) या किसी उद्देश्य का विचार (Idea of some object)।

→ पहले अर्थ में किसी विशेष कर्म के लिये भावनाएँ; जैसे-क्रोध, ईर्ष्या, सहानुभूति, दया इत्यादि के कारण ही मनुष्य कोई काम करता है। जैसे-सुखवादियों के अनुसार सुख और दुःख की भावनाएँ ही कर्मों की प्रेरणा है। मिल (J.S.Mill) ने स्पष्ट रूप से बतलाया है कि प्रेरणा, एक भावना (feeling) है, जो कर्ता से कुछ करने का संकल्प करवाती है। अतः इनके अनुसार भावना (feeling) और संवेग (Emotion) ही कर्म के प्रयोजन (Motive) है।

→ परन्तु ~~मनुष्य~~ एक विवेकशील प्राणी होने के कारण मनुष्य का कर्म केवल अन्धभाव या संवेग से ही प्रेरित नहीं होता। भाव या संवेग के उठने पर भी जब तक इसके अनुकूल इच्छा नहीं होगी तब तक कर्म संभव नहीं है। उन भावों और संवेगों पर विचार कर जब उसे अपनी इच्छा में परिवर्तित कर दिया जाता है और वैसा ही लक्ष्य बनाकर उसे प्राप्त करने का संकल्प लिया जाता है तो कर्म होता है। मैकेंजी के अनुसार नैतिक कर्म ऐच्छिक होते हैं और वे साधारणतः भावना प्रधान नहीं होते। भावना उनके लिये पर्याप्त नहीं, इसके साथ-साथ साध्य का विचार भी आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

→ इस प्रकार प्रयोजन में भावना और बुद्धि दोनों का सामंजस्य है। इच्छाओं का भावनाओं से ही उद्गम होता है। बुद्धि जब उन्हें चुन लेती है तो उसे प्रयोजन (Motive) कहा जाता है। अतः प्रयोजन में भावना (feeling) और बुद्धि (reason) दोनों सम्मिलित है।

⇒ अभिप्राय (Intention) :— किसी ऐच्छिक कर्म में मनुष्य जो भी चाहता है, वही उसका अभिप्राय है।

→ अभिप्राय विविध प्रकार के हो सकते हैं; जैसे - कर्म के तात्कालिक और दूरस्थ अभिप्राय, आन्तरिक और बाह्य अभिप्राय, प्रत्यक्ष और परोक्ष अभिप्राय, चेतन और अचेतन अभिप्राय, प्रादर्शगत और वस्तुगत अभिप्राय आदि।

→ किसी ऐच्छिक कर्म में जितने भी उद्देश्य होते हैं, वही अभिप्राय है। अतः अभिप्राय में निम्नलिखित बातें होती हैं —

(i) कर्म का मुख्य प्रयोजन (Motive), जिसके लिये कर्म किया जाता है।

(ii) उस साधन का विचार, जिससे साध्य की प्राप्ति की आकांक्षा है। जैसे - पिता पुत्र को दण्ड देता है। यहाँ दण्ड देना साधन है, मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करने का। अभिप्राय में यह शामिल है।

(iii) कुछ प्रत्याशित फलों का विचार; जैसे - पुत्र को दण्ड देने से उसे कष्ट होगा - ऐसा ज्ञान रहता है। अतः ऐसे प्रत्याशित फलों का विचार भी अभिप्राय में शामिल है, जो इच्छा किये जाने योग्य नहीं है, पर हम वैसा भी चाहते हैं; क्योंकि इसके बिना काम नहीं चल सकता।

→ इस प्रकार अभिप्राय में प्रयोजन (Motive) और साधन (Means) दोनों शामिल

⇒ प्रयोजन और अभिप्राय :— प्रयोजन और अभिप्राय दोनों संबंधित है। मिल और बेंथम भावना और संवेग को ही प्रयोजन मानते हैं और जिस लक्ष्य से कर्म प्रेरित होता है, उसके विचार को अभिप्राय। अतः इनके अनुसार प्रयोजन कर्म का निमित्त कारण (Efficient Cause) और अभिप्राय अंतिम कारण (Final Cause) है। इनके अनुसार अभिप्राय में कर्म के साधन का विचार शामिल नहीं है। परन्तु यह मत दोषपूर्ण है। प्रयोजन अभिप्राय का एक अंश है। अभिप्राय प्रयोजन की तुलना में अधिक व्यापक है; इसके अन्दर प्रयोजन शामिल है और साथ-साथ साधन का विचार भी।

→ प्रयोजन दूरस्थ, आन्तरिक, वस्तुगत और कदाचित प्रत्यक्ष अभिप्राय है।

Scanned with CamScanner